

## Six-day training programme inaugurated at TFRI

■ Staff Reporter

A SIX-DAY training programme to develop skills in youth, artisans, entrepreneurs and farmers on Value Addition - Bamboo Technologies is being organised at Tropical Forest Research Institute (TFRI), Jabalpur. The training funded under National Bamboo mission (NBM), New Delhi is being organized under Bamboo Technical Support Group-Indian Council of Forestry Research and Education.

During the inauguration of the training programme, Dr. G. Rajeshwar Rao, ARS, Director TFRI welcomed the participants and discussed the expectations of the diverse groups from the training programme. He also spoke about various sectors producing value added products of Bamboo like fabric manufacturing,



Dignitaries releasing training manual during inauguration of training programme at TFRI.

fashion designing, jewellery making, construction, furniture industry etc. Emphasizing about the extensive scope of Bamboo, he assured the participants for technical support in future also by the institute.

C Behera, IFS, Group Co-ordinator Research, addressed the gathering

about use of Bamboo as an important alternate to timber. He appreciated the value addition objective of the training which will aid upliftment of market value and cultivation of Bamboos.

Dr Fatima Shirin, Scientist and Training coordinator accentuated on

the importance of value addition and measures taken by government for duty free bamboo transit. She also briefed about various opportunities for skill development under NBM and establishment of village level small scale bamboo artefacts and furniture industries. Dignitaries also released the Training manual during the inaugural of the training programme.

Various senior scientists like Dr Nanita Berry, Dr Arun Kumar, Dr Geeta Joshi, Dr Pramod Kumar Tiwari, Dr Naseer Mohammad were also present during the inauguration of the training. Master trainers having experience as Bamboo artisans will be training around 25 artisans, entrepreneurs and fashion designing students from Institute of Excellence and Higher Education, Bhopal during the training programme.

Cityभास्कर

**CITY ACTIVITY**

जबलपुर, मंगलवार, 17 दिसम्बर 2019 . 04

## बाँस है लकड़ी का महत्वपूर्ण विकल्प

टीएफआरआई में मूल संवर्धन - बाँस प्रौद्योगिकियों पर छह-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन



जबलपुर। बाँस लकड़ी का महत्वपूर्ण विकल्प है। बाँस बाजार के उत्थान और विस्तार में इसके महत्व के बारे में बोलते हुए उक्त विचार सी. बेहरा, आईएफएस, समूह समन्वयक अनुसंधान ने व्यक्त किए। अवसर था टीएफआरआई में मूल संवर्धन - बाँस प्रौद्योगिकियों पर युवाओं, कारीगरों, उद्यमियों और किसानों में कौशल विकसित करने के लिए छह-दिवसीय प्रशिक्षण

कार्यक्रम के उद्घाटन का, जिसका आयोजन राष्ट्रीय बाँस मिशन (एनबीएम), नई दिल्ली के तहत बाँस तकनीकी सहायता समूह-भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद् के तहत किया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन के दौरान, डॉ. जी राजेश्वर राव, एआरएस, निदेशक टीएफआरआई ने बाँस के विभिन्न क्षेत्रों जैसे फैशन डिजाइनिंग, गहने एवं कपड़ा

निर्माण, फर्नीचर उद्योग आदि के बारे में भी बात की। अंत में उन्होंने बाँस के व्यापक दायरे पर जोर दिया। डॉ. फातिमा शीरीन, वैज्ञानिक और प्रशिक्षण समन्वयक ने बाँस के शुल्क मुक्त पारगमन और मूल्य संवर्धन में कौशल विकास के महत्व के लिए सरकार द्वारा उठाए गए उपायों की सराहना की।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन के दौरान प्रशिक्षण मैनुअल भी जारी किया। इस मौके पर डॉ. अरुण कुमार, डॉ. गीता जोशी, डॉ. ननिता बेरी, डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी, डॉ. नसीर मोहम्मद जैसे विभिन्न वरिष्ठ वैज्ञानिक भी उपस्थित थे। बाँस कारीगरों के रूप में अनुभव रखने वाले मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान लगभग 25 कारीगरों, उद्यमियों और फैशन डिजाइनिंग के छात्रों को प्रशिक्षण देगा। पी-3

# लकड़ी का अहम् विकल्प है बांस, कलाकृति फर्नीचर उद्योग के बारे में लोगों दी जानकारी

जबलपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) में सोमवार को बांस प्रौद्योगिकी पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. जी राजेश्वर राव एआरएस निदेशक टीएफआरआई ने प्रतिभागियों को बांस की कलाकृतियों और गहने, कपड़े सहित फर्नीचर उद्योग की स्थापना के बारे में विशेष जानकारी दी।

राष्ट्रीय बांस मिशन (एनबीएम) नईदिल्ली के तहत वित्त पोषित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन बांस तकनीकी सहायता समूह भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद के तत्वावधान में किया जा रहा है। कार्यक्रम में समूह समन्वयक सी बेहरा



बांस प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम के अतिथि और प्रतिभागी। ● नईदुनिया

आईएफएस ने बांस को लकड़ी का अहम् विकल्प बताया। उन्होंने बांस बाजार के उत्थान और विस्तार की जानकारी दी। प्रशिक्षण समन्वयक विज्ञानी डॉ. फातिमा शीरीन ने एनबीएम के तहत कौशल विकास के लिए विभिन्न अवसरों और ग्रामीण स्तर बांस कलाकृतियों व फर्नीचर उद्योगों की स्थापना के बारे में बताया। ये रहे उपस्थित-उद्घाटन के दौरान

डॉ. अरुण कुमार, डॉ. गीता जोशी, डॉ. ननिता बेरी, डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी, डॉ. नसीर मोहम्मद आदि विज्ञानी उपस्थित रहे। बांस के प्रशिक्षण कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर लगभग 25 कारीगरों, उद्यमियों और इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस एंड हायर एजुकेशन, भोपाल से फैशन डिजाइनिंग के छात्रों को प्रशिक्षण देंगे।

राज एक्सप्रेस

महानगर

बुधवार, 18 दिसंबर, 2019  
www.rajexpress.co

7 जबलपुर

## बांस प्रौद्योगिकी पर एक्सपर्ट ने दी विस्तृत जानकारी



जबलपुर (आर एन एन)। उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान टीएफआरआई में मूल संवर्धन-बांस प्रौद्योगिकियों पर युवाओं, कारीगरों, उद्यमियों और किसानों में कौशल विकसित करने के लिए छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में

टीएफआरआई निदेशक डॉ. जी. राजेश्वर राव ने बांस के व्यापक दायरे पर जोर दिया और संस्थान द्वारा भविष्य में भी तकनीकी सहायता के लिए प्रतिभागियों को आश्चस्त किया। राष्ट्रीय बांस मिशन, एनबीएम नई दिल्ली के तहत वित्त पोषित इस प्रशिक्षण का आयोजन बांस तकनीकी सहायता समूह-भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद के तहत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में अनुसंधान समूह समन्वयक सी. बेहरा ने बांस को लकड़ी का महत्वपूर्ण विकल्प

होने की बात कही। उन्होंने प्रशिक्षण के मूल्य संवर्धन के उद्देश्य की सराहना की और बांस बाजार के उत्थान और विस्तार में इसके महत्व के बारे में बताया। वैज्ञानिक और प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. फातिमा शीरीन ने बांस के शुल्क मुक्त पारगमन और मूल्य संवर्धन में कौशल विकास के

महत्व के लिए सरकार द्वारा उठाए गए उपायों की सराहना की। इस अवसर पर डॉ. अरुण कुमार, डॉ. गीता जोशी, डॉ. ननिता बेरी, डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी, डॉ. नसीर मोहम्मद सहित विभिन्न वरिष्ठ वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे। बांस कारीगरों के रूप में अनुभव रखने वाले मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान लगभग 25 कारीगरों, उद्यमियों और इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस एंड हायर एजुकेशन भोपाल से फैशन डिजाइनिंग के छात्रों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

